डब्ल्यूबी 2 किस्म की प्रमुख विशेषताएँ

पोषक तत्वों की गुणवत्ता

- डब्ल्यूबी 2 के दानों में उच्च जिंक (42.0 पीपीएम) है, जो कि डीपीडब्ल्यू 621–50 (35.4 पीपीएम) की तुलना में 18.6% अधिक है।
- डब्ल्यूबी 2 भी अधिक लोहा (40.0 पीपीएम) है जो कि डीपीडब्ल्यू 621–50 (38.1 पीपीएम) की तुलना में 5.2% अधिक है।
- डब्ल्यूबी 2 अधिक अनाज प्रोटीन (12.4%) पाया जाता है।
- डब्ल्यूबी 2 के दानों में अधिक चमक और अधिक भार हैं जो डीपीडब्ल्यू 621–50 की तुलना में बेहतर है।
- डब्ल्यूबी 2 में रोटी हेतु एक अत्यंत उपयुक्त प्रजाति है और यह अपने बेहतर रोटी बनाने गुणवत्ता को दर्शाता है।

उपज परीक्षण में बेहतरीन प्रदर्शन

- गेहूँ की प्रजाति डब्ल्यूबी 2 से (51.6 कि./हैक्टेयर) का उत्पादन मिलता हैं जो कि डीपीडब्ल्यू. 621–50 (50.2 कु./हैक्टेयर) से 2.8% श्रेष्ठ पाया गया हैं।
- यह प्रजाति समय से बुवाई के लिए हैं।

रोग एवं कीट प्रतिरोधकता

- डब्ल्यबी 2 प्रचलित पीला रतुआ के लिए प्रतिरोधी है।
- यह भूरे रतुआ रोगो के लिए भी प्रतिरोधी है।
- डब्ल्यूबी 2 प्रजाति में पर्ण चूर्ण आसिता के प्रति उच्च प्रतिरोध हैं।
- डब्ल्यूबी 2 भी अन्य रोगों और कीटों के लिए प्रतिरोधी है।

उपयोग

इस किस्म का उपयोग गर्भवती महिलाओं एवं कुपोषण के शिकार बच्चों के लिए अधिक हितकारी है।

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री) : 1800 180 1891
Web : www.dwr.res.in

श्री राधा मोहन सिंह
मा0 कृषि मंत्री, भारत सरकार

प्रकाशक :
डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल–132001

विस्तार फोल्डर 62/2017

डब्ल्यूबी 2

सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर गेहूँ की नवीनतम् किस्म

(देश की प्रथम जैव पोषित किस्म)

संकलन एवं सम्पादन

रवीश चतरथ, विकास गुप्ता, सतीश कुमार, ओमप्रकाश, राजकुमार, मदन लाल, अमित शर्मा, अनिल खिप्पल, विनोद तिवारी एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल - 132001, भारत
ICAR- Indian Institute of Wheat and Barley Research
Karnal - 132001, India

डब्ल्यूबी 2 किस्म उन्नत उत्पादन तकनीक एवं विशेषताएं

क्र.स.	मानक	विवरण
1	जलवायु एवं क्षेत्र	यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर मंडल को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर), हिमाचल प्रदेश (ऊना व पाटा घाटी), जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिले), और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के सिंचित क्षेत्रो में समय से बुआई के लिए उपयुक्त ।
2	भूमि का चुनाव एवं तैयारी	समतल उपजाऊ मिट्टी का चुनाव करके, जुताई पूर्व सिंचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, कल्टीवेटर और भूमि समतल करने वाले यंत्रों के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए ।
3	बीज उपचार	विटावैक्स (कार्बोक्सिन) नामक कवकनाशी की 2.0 ग्राम/किलोग्राम बीज से उपचरित करना चाहिए ।
4	बुआई का समय	5–25 नवम्बर
5	बीज दर और अंतराल	कतारों मे बुआई के लिए 40 किलोग्राम/ एकड़ मात्रा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से०मी० तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 5 से०मी० रखनी चाहिए ।
6	उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय	24 किलोग्राम फास्फोरस 16 किलोग्राम पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 60 किलोग्राम मात्रा का 1/3 भाग बीजाई के समय तथा नत्रजन की शेष 2/3 मात्रा बुआई के 35–40 दिनों बाद प्रयोग करना चाहिए ।
7	खरपतवार नियंत्रण	पेंडिमिथालिन अंकुरण–पूर्व खरपतवारनाशी की उत्पाद मात्रा 1.2 से 1.5 ली. प्रति एकड़ के दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए । चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी दवा की उत्पाद मात्रा 500 ग्राम/एकड़ या मैट्सल्फ्यूरॉन 8 ग्राम/एकड़ या कारफेंट्राजोन 20 ग्राम/एकड़ दवा का 120 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है । संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफॉप 160 ग्राम या फेनोक्साप्रॉप 400 ग्राम/एकड़ या सल्फोस्ल्फुरॉन की 13 ग्राम/एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।
		मिश्रित खरपतवारो के नियंत्रण के लिए 2,4–डी या मेट्स्ल्फुरॉन को सल्फोस्ल्फुरॉन या आईसोप्रोटुरॉन के साथ बुआई के 30–35 दिनो बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर अनुक्रमिक छिडकाव किया जाना चाहिए ।
8	रोग एवं कीट नियंत्रण	डब्ल्यू. बी. 2 पीला रतुआ और भूरा रतुआ के लिए प्रतिरोधी है परंतु यदि फसल मे पीला एवं भूरा रतुआ, करनाल बंट या चूर्णील फफूंदी रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण हेतू प्रोपिकोनजोल नामक दवा की 0.1% (1.0 मिली / लीटर) मात्रा का 15 दिनों के अंतराल पर का दो बार छिडकाव करना चाहिए । माहू या चेपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड 17.8 एस. एल. की 40 मी०ली०/ एकड़ मात्रा का छिडकाव करना चाहिए ।
9	सिंचाई	फसल मे सामान्यतः 5 से 6 सिंचाई की आवश्कता होती है । जिसमें पहली सिंचाई 20 से 25 दिन बाद तथा अन्य सिंचाई 20 से 25 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए ।
10	कटाई	किस्म कटाई के लिए 135–145 दिन (औसत 142 दिन) में तैयार हो जाती हैं ।
11	अनुमानित उपज	किस्म की उपज 23–24 कु० प्रति एकड़ ।

नोटः– उपरोक्त, किस्म को उगाने की एक आदर्श विधि है जिसमें पर्यावरण में भिन्नता के कारण कुछ अंतर पाया जा सकता हैं ।

डब्ल्यूबी 2